March 2014

भारत के दस लाख लापता

विश्व टी. बी. दिवस के विषय पर पत्रकारों के लिए एक संक्षिप्त गाइड

उन तीस लाख तक पहुँचिये...। टी बी - तलाश, उपचार और इलाज...।

भारत के दस लाख लापता

कैसे भारत में दस लाख टी बी के मरीज़ बिना निदान, इलाज और सहायता के बिना रह रहे हैं

हर साल, दुनिया भर में 90 लाख लोगों को टी बी होता है। अनुमान है कि इनमे से एक तिहाई, यानि 30 लाख लोगों के पास ज़रूरी सुविधाओं तक पहुँचने का साधन नहीं है। इनमे ज़्यादातर लोग दुनिया के सबसे गरीब, असुरक्षित सम्प्रदायों में रहते हैं। सार्वजानिक स्वास्थ्य सेवा की व्यवस्थाएँ इनसे बेखबर रहती है, और ये उनुपचारित रह जाते हैं।

2013 की ग्लोबल टी बी रिपोर्ट में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन तीस लाख लोगों को "गुमशुदा" केस बताया है। इनमे से विश्व में सबसे घनी मात्रा में ये गुमशुदा रोगी (9.3 लाख यानि करीब दस लाख) भारत के हैं।

इसका क्या अर्थ है? ये दस लाख मरीज़ कहाँ हैं और इन्हे "गुमशुदा" क्यों बताया जा रहा है? दो संभावनाएं हैं:

- इनमे टी बी का निदान नहीं हुआ है, यानि इन्हे मालूम नहीं है कि इन्हे ये रोग है।
- इनका निदान हुआ है और इनका टी बी का उपचार निजी क्षेत्र में हो रहा है। इसका मतलब है कि इनके निदान और इलाज की स्थिति के बारे में कोई जानकारी नहीं है - इनका इलाज शुरू/ख़त्म हुआ है या नहीं , इनका इलाज कितनी उत्कृष्टता से किया जा रहा है, इत्यादि।

भारत में टी बी: कहाँ हैं भारत के दस लाख लापता?

भारत पर टी बी का बोझ सबसे भारी है - यहाँ 23 लाख केस मौजूद हैं । ये रोग आज भी भारत में मृत्यु के कारणों में से एक प्रमुख कारण है, जो हर तीन मिनट में दो लोगों को मार डालता है, और रोज़ 750 लोगों की मौत का कारण बनता है। इन लाखों लापता लोगों का अगर निदान न किया जाये, तो इनका अपने परिवार और सम्प्रदायों में संक्रमण फैलाने का खतरा इस स्थिति को और भी बिगाड़ सकता है।

पकड़ में न आना या रिपोर्ट न किया जाना: गुमशुदा मरीज़ों के बारे में या तो पता नहीं चला है, या फिर सरकारी प्राधिकारियों को रिपोर्ट नहीं किया गया है।

परिवार और संप्रदाय में संक्रमण फैलाना : टी बी एक बहुत ही संक्रामक बीमारी है, और ये बिलकुल अनिवार्य है कि टी बी का एक भी केस छूटना नहीं चाहिए। जब किसी भी टी बी मरीज़ की शिनाख़्त होती है, उसे 6 - 8 महीनों तक की प्रणाली दिया जाता है जिससे वह ठीक हो सकता है। लेकिन सस्ते और प्रभावी इलाज के बावजूद, रोग का निदान करने में किसी भी तरह की देरी या लापरवाही से टी बी का प्रसार बढ़ सकता है।

दवा प्रतिरोध: दवा प्रतिरोध: दवा प्रतिरोधक टी बी के बढ़ौतरी के कारण इस रोग का इलाज करना पेचीदा हो गया है। प्रतिरोधक टी बी के मरीज़ों पर टी बी की आम दवाइयों का असर नहीं होता, जिससे इनका इलाज करना महंगा होता है और शारीरिक और भावात्मक रूप, दोनों से ही मुश्किल होता है।

हम ये कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर टी बी मरीज़ का पता चल जाये?

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर टी बी की चुनौती से लड़ने के लिए यह ज़रूरी है कि सभी साझेदार (सरकार, निजी स्वास्थ्य सेवा सेक्टर, वैज्ञानिक विशेषज्ञ, अन्वेषक और समाज) सभी मिलकर काम करें ताकि:

- टी बी पर लोगों की जागरूगता बढ़े : लोगों के मन में स्थित गलतफहमियां और टी बी को एक कलंक के नज़रिये से देखे जाने के कारण, कईओं को सेवाओं तक पहुँचने से रोक सकती हैं। यह संदेश फैलाना ज़रूरी है कि टी बी का इलाज सम्भव है और इससे मुक्ति पायी जा सकती है। यह लोगों को ज़रुरत आने पर स्वास्थ्य सेवाएं ढूंढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

- टी बी के सही निदान और इलाज के लिए प्रोत्साहन देना : जल्द और सही निदान भारत में टी बी के नियंत्रण का प्रमुख तरीका है। आधुनिक नैदानिक साधनों के सही उपयोग से इस रोग का मरीज़ और उसके परिवार पर पड़ने वाला असर कम किया जा सकता है।

- दवाइयों का उचित उपयोग सुनिश्चित किया जाये : प्रतिरोधक टी बी के केस कम करने में और नए केस के निवारण में डॉक्टर और मरीज़ दोनों ही भूमिका निभाते हैं। डॉक्टरों को टी बी के मरीज़ और टी बी के लक्षणात्मक मरीज़ों का उपचार मानकीकृत नियमों और दिशा-निर्देशों के अनुसार करना चाहिए। मरीज़ बीच में बिना किसी रूकावट के, निर्धारित तरीके से इलाज ले सकते हैं।

- सार्वजनिक और निजी सेक्टर के बीच साझेदारी बने : भारत में टी बी के करीब 50 % मरीज़ निजी सेक्टर में इलाज करवाते हैं, जो अनियंत्रित है। बेहतरीन निदान और इलाज की सुविधाएँ सर्वव्यापी रूप से प्रदान करने का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है जब निजी और सरकारी सेक्टर साथ मिलकर काम करें। 2013 में भारत सरकार ने सभी प्रबंधकों के लिए अनिवार्य कर दिया था कि वे टी बी के हर केस की सूचना दें।

भारत में टी बी: आपको क्या - क्या पता होना चाहिए

- टी बी मृत्यु दर : टी बी हर साल तीन लाख भारतीयों की मौत का कारण बनता है और युवा पुरुषों के मौत के प्रमुख चार कारणों में से एक है।

- टी बी का आर्थिक प्रभाव : टी बी के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मूल्य का अनुमान हर साल करीब $23.7 अरब बताया गया है। सामान्य रूप से टी बी से पीड़ित व्यक्ति रोज़गारी के तीन से चार महीने खो बैठता है। यानि सामान्य तौर पर घरेलू कमाई में 20-30% नुक्सान हो जाता है।

- टी बी का सामाजिक प्रभाव : टी बी अनुपातहीन रूप से गरीबों पर असर करता है, खास तौर पर महिलाओं और बच्चों पर। हर साल तीन लाख बच्चे टी बी के कारण अनाथ हो जाते हैं और एक लाख महिलाऐं अपने परिवारों से निकाल दी जाती हैं।

- दवा प्रतिरोधक टी बी : अनुमानित है कि 99,000 एम् डी आर टी बी (मल्टी ड्रग रेसिस्टेंट टी बी) के केस पाये गए हैं, जिसका इलाज करना मुश्किल और महंगा होता है। प्रतिरोधक टी बी का इलाज 2 से 5 लाख रुपयों के बीच में पड़ता है, और इसमें दो साल भी लग सकते हैं। इस इलाज की प्रक्रिया इतनी मेहेंगी, पेचीदा और ज़हरीली होती है कि एक तिहाई एम् डी आर टी बी के मरीज़ मर जाते हैं।

- शहरी टी बी : जनसख्या का भरी घनत्व, निजी सेक्टर की विविधता, और ख़राब रहन सहन के हालात टी बी के फैलाव में बढ़ौतरी पैदा करते हैं। मुंबई जैसे शहरों में आधे से भी अधिक टी बी के मरीज़ निजी सेक्टर के व्यवस्था में आते हैं, जहाँ अलग-अलग सेवाओं की गुणवत्ता अलग-अलग स्तर की होती है। शहरों में बस्ती में रहने वालों को टी बी होने का दूसरों से ज़यादा खतरा रहता है।

भारत के दस लाख लापता

March 2014
www.media4tb.org

यह प्रलेख REACH के लिए ग्लोबल हेल्थ स्ट्रेटेजीज ने तैयार किया है, और यह उन पत्रकारों के लिए साधन के रूप में बनाई गयी है जो विश्व टी बी दिवस के विषय पर कहानियां लिखने की योजना कर रहे हैं।
अगर आपके पास कोई प्रश्न हों, तो हमे यहाँ संपर्क कीजिये:
anupamasrinivasan.reach@gmail.com

इस संसाधन का विकास यूनाइटेड वे वर्ल्डवाइड के सहायक अनुदान की मदद से
लिली फाउंडेशन के कारण संभव हो पाया है,
जो लिली एम् डी आर-टी बी की साझेदारी के हेतु है।